प्रेस विज्ञप्ति

आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास – 2010

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

श्रमशील व्यक्ति उपयोगी होता है – आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 21 जुलाई, 2010

दुनिया में बाल और पण्डित दोनों प्रकार के व्यक्ति मितले हैं। ज्ञानी आदमी को पण्डित कहा गया है और अज्ञानी को बाल कहा गया है, जैन वांग्मय में बाल और पण्डित का उल्लेख मिलता है कि जो असंयमी है वह बाल कहलाता है साधु है वह पण्डित होता है, पण्डित शब्द के भी अनेक अर्थ होते हैं, पण्डित वह है जिसमें पण्डा उत्पन्न हो गई ज्ञान प्राप्त हो गया है वह पण्डित होता है।

उक्त विचार आचार्यश्री महाश्रमण ने तेरापंथ भवन में उपस्थित जनमेदनी को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि बुद्धि तत्व का अनुगमन करने वाली बुद्धि पण्डा है। अपने अज्ञान को पहचानने वाला भी पण्डित होता है, अपने भीतर छिपे अज्ञान को जान लेता है तो एक सीमा तक वह पण्डित बन जाता ह। आचार्यश्रो महाश्रमण ने कहा ज्ञान के साथ अहंकार न आए, ज्ञान के साथ संयम का विकास होना चाहिए। जिस तरह दूध का सार मक्खन होता है उसी तरह ज्ञान का सार आचार है। आदमी का आचरण नैतिकता युक्त हो, नशा और बुराइयों से बचने का प्रयास हो।

इस अवसर पर बिमलकुमार नाहटा ने आचार्यश्री महाश्रमण को उनके पदाभिषेक समारोह की एक बड़ी तस्वीर (फोटो) भेंट की। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

जीतकल्प सभाष्य का विमोचन

जीतकल्प सुभाष्य का विमोचन समणी कुसुमप्रज्ञा, डॉ. जे.पी.एन. मिश्रा व अनुपम जैन ने आचार्यश्री महाश्रमण व साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा को समर्पित कर किया। साध्वी प्रमुखाश्री कनकप्रभा ने नौ सौ पृष्ठों के इस महाग्रंथ का उल्लेख करते हुए कहा कि यह प्राकृत भाषा का ग्रंथ है जिसमें समणी कुसुमप्रज्ञा ने अपने श्रम और समय का नियोजन किया है, भाष्य निर्युक्ति के काम में रूचि दिखाई है, यह साध्वी समाज, समणी समाज के लिए गौरव की बात है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि एक सुंदर ग्रंथ हमारे हाथों में आया है जिसका बीड़ा आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ ने उठाया था और वह काम आज चल रहा है, कार्य आगे गतिमान है, इतने बड़े गंथ का काम श्रम साध्य है।

– **शीतल बरड़िया** (मीडिया संयोजक)